श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

॥ श्री गीत गोविंद॥

बड़ी देर भई नंदलाला, तेरी राह तके बृज बाला ।
ग्वाल बाल इक इक से पूछें, कहाँ हैं मुरली वाला ॥

कोई ना जाए कुञ्ज गलिन में तुझ बिन कलियां चुनने को ।
तरस रहे हैं यमुना के तट धुन मुरली की सुनने को ।
अब तो दरस दिखा दे नटखट , क्यूं दुविदा में डाला रे ॥

संकट में हैं आज वो धरती जिस पर तूने जन्म लिया ।
पूरा करदे आज वचन वो गीता में जो तूने दिया ।
कोई नहीं हैं तुझ बिन मोहन भारत का रखवाला ॥

॥ गीतम् 9 ॥

(अथ नवमः(फ्) प्रबन्धो देशाखरागेण एकतालिताले गीयते)

स्तनविनिहितमपि हारमुदारम् ।
सा मनुते कृशतनुरतिभारम् ॥
राधिका विरहे तव केशव
माधव ! वामन ! विष्णो !॥ 1॥

सरसमसृणमपि मलयजपङ्कम् ।
पश्यति विषमिव वपुषि सशङ्कम् ॥ 2॥ राधिका

श्वसितपवनमनुपमपरिणाहम् ।
मदनदहनमिव वहति सदाहम् ॥ 3॥ राधिका

दिशि दिशि किरति सजलकणजालम् ।
नयननलिनमिव विगलितनालम् ॥ 4॥ राधिका

नयनविषयमपि किसलयतल्पम् ।
कलयति विहितहुताशविकल्पम् ॥ 5॥ राधिका

त्यजति न पाणितलेन कपोलम् ।
बालशशिनमिव सायमलोलम् ॥ 6॥ राधिका

हरिरिति हरिरिति जपति सकामम् ।
विरहविहितमरणेन निकामम् ॥ 7॥ राधिका

श्रीजयदेवभणितमिति गीतम् ।
सुखयतु केशवपदमुपनीतम् ॥ 8॥ राधिका